वैश्वीकरण : सांस्कृतिक पहचान व संकट

शालिनी झा शोधछात्रा, मो.ला.सु.वि.वि., उदयपुर, प्रवक्ता–समाजशास्त्र विभाग, (एल.डी.पी.एस. कन्या महाविद्यालय विद्यावाड़ी, पाली, राजस्थान), ईमेल – sha4jha@gmail.com

तृप्ता झा सहायक प्राध्यापक – भूगोल विभाग, चन्द्रशेखर आजाद शासकीय स्नातकोत्तर अग्रणी महाविद्यालय, सीहोर

Abstract: वैश्वीकरण शब्द का प्रयोग आज आम हो गया है। किसी भी प्रकार के परिवर्तन को वैश्वीकरण के संदर्भ में देखा जाता है। विश्व की सिकुड़न, विश्व की एकमतता, नये अर्न्तसम्बंधों का विकास तथा आधुनिकीकरण के नये आयाम आदि के स्वरूप को वैश्वीकरण की प्रक्रिया कहा जाता है। वैश्वीकरण को वैश्विक समाज के रूप में देखा जाता है, जिसका निहितार्थ सम्पूर्ण विश्व को एक समाज का एक ग्राम माना जाता है। वैश्वीकरण वैश्विक समाज में परिवर्तनों का सूचक है। वैश्वीकरण प्रारम्भिक रूप में आर्थिक संदर्भ में देखा जाता था, लेकिन अब यह मात्र आर्थिक ही नहीं वरन् सामाजिक, राजनैतिक, पर्यावरणीय, जनसंचार, प्रवास, शिक्षा और सांस्कृतिक मुद्दों में भी देखा जा रहा है।

वैश्वीकरण की अवधारणा बहुत अधिक पुरानी नहीं है इसका उदय नब्बे के दशक में हुआ है। वैश्विक समाज की अन्तनिर्भरता सामाजिक तथा आर्थिक आधार पर है। वैश्वीकरण से तात्पर्य केवल स्थानीय संस्कृति को वैश्विक संस्कृति से जोड़ना मात्र नहीं है अपितु स्थानीय संस्कृति की स्थानीयता को मूल रूप से बनाऐ रखना है। वैश्वीकरण का प्रमुख आधार विभिन्न देशों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक अंतनिर्भरता को माना जाता है।

इतिहास में पहली बार स्थानीय और वैश्वीय लोग एक कड़ी में बंध गये है। संचार साधनों, सूचना तकनीक व आवागमन के साधन अत्यधिक बढ़े है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया विश्व समाज को अंतर्राष्ट्रीय, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सूत्र में बांधने का कार्य कर रही है। वैश्वीकरण ने भौगोलिक दूरियों की बाधा को समाप्त किया है और दुनिया के लोगों को एक दूसरे के निकट ला दिया है लेकिन इस प्रक्रिया नें सांस्कृतिक पहचान के संकट को उत्पन्न कर दिया है।

मीडिया की तेज रफ्तार ने सांस्कृतिक वैश्वीकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया है। आर्थिक वैश्वीकरण के अतिरिक्त भारत में विदेशी प्रभावों से बढ़ता पोप्यूलर कल्चर भारतीय सांस्कृतिक पहचान और विरासत को क्षति पहुंचा रहा है। भारत अपनी प्रादेशिक विभिन्नताओं वाला बहुविध संस्कृति का समाज है और वैश्वीकरण की प्रक्रिया उसकी इस विशिष्टता को चुनौति देकर एक समरूप संस्कृति को बढ़ावा दे रही है। प्रस्तुत शोध पत्र भारत में सांस्कृतिक पहचान के संकट और वैश्वीकरण के संदर्भ में है।

Key Words: वैश्वीकरण, सामाजिक, सांस्कृतिक संस्कृति, अर्थव्यवस्था,

सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया आज दुनियाभर में बहुत तेज हो गई है और सभी देशों के लोग एक ऐसी जटिल और आर्थिक कड़ी में बंध गये है कि उन्हें अलग करके समझा ही नहीं जा सकता। हमारे देश के बाजारों में विभिन्न देशों और अंचलों की वस्तुएं पर्याप्त मात्रा में बिक्री के लिए अटी पड़ी है। वस्तुऐं संस्कृति की भी है, कला की भी है और दिन प्रतिदिन काम में आने वाली भी है। आज हम जिस दुनिया में रह रहे है, उसमें अन्योन्याश्रितता बढ़ गई है। पहले लोग एक ही देश में और देश आपस में आवश्यकता पूर्ति के लिए इतने अधिक अन्तर्निर्भर नहीं थे। पहले एक गांव या एक सांस्कृतिक समूह अपने आप में अलग दुनिया थी।

इतिहास में पहली बार स्थानीय और वैश्वीय लोग एक कड़ी में बंध गये है। संचार साधनों में वृद्धि, सूचना तकनीक और आवागमन के साधन अत्यधिक बढ़े हैं। वैश्वीकरण को केवल दुनिया को जोड़ने वाले नेटवर्क के रूप में नहीं देखना चाहिए बल्कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया अन्तर्राष्ट्रीय, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सूत्र में बांधने का कार्य कर रही है। वैश्वीकरण हमारे स्थानीय दिन

प्रतिदिन के जीवन को एकदूसरे के निकट ला रहा है लेकिन उनमें तनाव और सांस्कृतिक पहचान के संकट को भी उत्पन्न कर रहा है।

आज की दुनिया बड़ी तेज रफ्तार से बदल रही है। 1980 का दशक यूरोप और अमेरिका में उत्तर आधुनिकता की अवधारणा का था तो 1990 का दशक वैश्वीकरण का है। इस प्रक्रिया में दुनिया भर के सामाजिक सम्बंध गहरे और घनिष्ठ हो रहे है, इस का एक समाजशास्त्रीय और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य भी है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ज्यादा पुरानी नहीं है, शायद दस बीस वर्षों की है। सैटेलाइट सूचना व्यवस्था, उपभोग के वैश्वीय प्रतिमान, कोस्मोपोलिटन जीवन पद्धति, वेश्वीय खेलकूद, विश्व पर्यटन वैश्वीकरण को बढ़ावा दे रहे हैं। वैश्वीकरण ने स्वास्थ्य समस्याओं और पर्यावरण को भी सम्पूर्ण संसार की समस्या बना दिया है। अतः वैश्वीकरण एक सामाजिक–सांस्कृतिक प्रक्रिया है जिसमें भौगोलिक दबाव कमजोर हो गये है और इसी तरह सांस्कृतिक और सामाजिक संबंधों की जमावट भी ढीली पड़ गई है।

वैश्वीकरण में तीन बातें प्रमुख है –

1. सीमाओं के आर पार वस्तुओं, निवेशनों, लोगों, पूंजी, संचार, विचारों आदि का संबंध एवं गमनागमन।
2. इनको प्रतिबंधित करने वाली बाधाओं को हटाया जाना, तथा
3. उदारीकरण जिसने सारे विश्व को एक गांव बना दिया ळें

एंथनी गिडिन्स के अनुसार वैश्वीकरण विश्वव्यापी, सामाजिक संबंधों का सघनीकरण है। ओहमे उसे 'सीमारहित विश्व' मानता है। यह लोगों के मध्य 'अधि–भूभागीय' संबंधों का विकास है जहां भूमि का महत्व घट गया है। अब इन संबंधों का विस्तार विश्व व्यापी एवं सीमाओं से परे बढ़ रहा है। अब एक एकीकृत एवं सार्वभौम वैश्विक अर्थव्यवस्था राज्य नियंत्रित संगठनों एवं राज्य की विचारधारा से बाहर जाकर कार्य कर रही है।

वैश्वीकरण के अनेक रूप

वैश्वीकरण के अनेक रूप है राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि।

राजनैतिक वैश्वीकरण – इसके अर्न्तगत राष्ट्र राज्यों की संप्रभुता का क्षरण हो रहा है, उनके भीतरी क्षेत्रों में हस्तक्षेप किया जा रहा है और अर्न्तराष्ट्रीय संगठनों एवं गैर राज्यों की भूमिका बढ़ती जा रही है।

आर्थिक वैश्वीकरण – इसके अन्तर्गत राज्यों की अर्थव्यवस्थाऐं या आर्थिकियां विश्व अर्थव्यवस्था का भाग बनती जा रही है। जिसके अनुसार उत्पादन का अन्तरार्ष्ट्रीयकरण हो गया है और वित्तीय पूंजी सभी देशों के मध्य उन्मुक्त रूप से प्रवाहित हो रही है।

सांस्कृतिक वैश्वीकरण – सूचनाओं, उपभोग एवं मनोरंजन की सामग्री का संप्रेषण एवं राष्ट्रों, क्षेत्रों एवं व्यक्तियों के मध्य अंतरों को मिटाने की शुरूआत कर रहा है। इसे मैक्डोनल्ड संस्कृति का प्रसार कहा जा रहा है। बढ़ता हुआ समान भोजन, समान रूचियां, समान फैशन, समान पहनावा, खेलों, सिने–स्टोरों, टी.वी. कार्यक्रमों में समान रूझान सांस्कृतिक वैश्वीकरण का रूप है। इस परिस्थिति में एक विशिष्ट संस्कृति के रूप में अपनी पहचान और अस्तित्व बनाये रखने की समस्या उभर रही है।

भारत में वैश्वीकरण – भारत में वैश्वीकरण का प्रारम्भ 1991 में हुआ। उस समय भारत के प्रधानमंत्री नरसिंहराव और वित्त मंत्री मनमोहन सिंह थे। यह नये आर्थिक युग की शुरूआत थी। इस अर्थव्यवस्था की विशेषता यह है कि यह अपने नये अवतार में संघीय बाजार अर्थव्यवस्था बन गई। इसमें राज्यों को केन्द्रीय योजना अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत अपनी वित्तिय स्थिति में परितर्वन का अधिकार मिला।

वैश्वीकरण के फलस्वरूप भारत में उदारवाद और निजीकरण की नीति आई। भारत के आर्थिक उदारीकरण की रणनीति के पीछे राजनैतिक दबाव ही है। 1991 में देश की अर्न्तराष्ट्रीय स्थिति ऐसी बन गई कि हमारे सामने उदारीकरण के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प नहीं था। अमित भादुड़ी और दीपक नैयर ने भारतीय वैश्वीकरण की व्याख्या तीन तत्वों से की है, इस प्रक्रिया में सबसे बड़ा तत्व व्यापार, दूसरा निवेश और तीसरा वित्त है।

भारत में वैश्वीकरण अन्य देशों की तरह कोई दशक पुराना है। यह सोचने और मूल्यांकन करने की बात है कि आर्थिक उदारीकरण और वैश्वीकरण ने हमारी समस्याओं का हल कहां तक निकला है। हमारी आर्थिक समस्याएं बड़ी जटिल है। वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण ने स्थानीय धंधों को, स्वदेशी उत्पादन को बहुत ठेस पहुंचाई है। भारत में सूचना समाज अभी ठीक से विकसित नहीं है, तकनीकी क्षेत्र का ज्ञान भी अभी बहुत पिछड़ा हैं, हम दुनिया के विकसित देशों के बाजार से ठीक से प्रतियोगिता नहीं कर सकते। हमारा माल बाजार से टक्कर नहीं ले सकता। अपने ही स्थानीय बाजार में हम उत्पादन बेच नहीं पाते। स्थानीय कारखाने बंद होने लगे हैं।

वैश्वीकरण का प्रमुख आयाम आर्थिक हैं, यह पूंजीवादिता को बढ़ावा देता है। वर्तमान समय में पूंजीवाद ने सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था को परिवर्तित कर दिया है। जिससे स्थानीय सामाजिक सांस्कृतिक संरचना में परिवर्तन आ रहे हैं। वैश्वीकरण की प्रक्रिया में स्थान व समय की दूरी मिट रही है। वैश्वीकरण के सांस्कृतिक पक्ष को देखें तो विश्व व्यवस्था की संरचना के वाहक के रूप में पांच आधार महत्वपूर्ण है –

- नृजातीय क्षेत्र
- तकनीकी क्षेत्र
- वित्तीय क्षेत्र
- जनसंचार परिदृश्य
- विचारधारात्मक परिदृश्य

योगेन्द्र सिंह वैश्वीकरण को विकासशील देशों के समक्ष चुनौतियों के रूप में देखते है। यह मानवीय इतिहास की विशिष्ट प्रक्रिया है। विकासशील देशों में जहां सार्वभौमिक परिणाम के आधार पर वैश्वीकरण की बात होती है वहीं दूसरी और स्थानीय संस्कृति पर वैश्वीकरण के कारण खतरे की बात कही जाती है। यह अन्तर्विरोध एक ओर सार्वभौमिक प्रक्रियाओं का प्रतीक है वही दूसरी और बहुलता का उत्पादक है जहां वैश्वीकरण एकीकृत तथा संगठित दृष्टिकोणों का प्रतीक है वहीं यह स्थानीय संस्कृति, समाज, नृजातीयता के प्रश्न पर बहुलता का प्रतिनिधित्व करता है। वैश्वीकरण के सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों ही पक्षों का आंकलन किया जाता है। एक और वैश्वीकरण स्थानीय संस्कृति को खतरा माना जाता है वहीं दूसरी और इसी स्थानीय संस्कृति को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है। जिससे वैश्विक स्तर पर पहचान मिलती है तथा ये संस्कृतियां अपने मूल में अधिक गहरी होती जाती है।

जनसंचार माध्यम संस्कृति के वैश्वीकरण के प्रसार का महत्वपूर्ण वाहक है। टेलीफोन, आवाज रिकॉर्ड कर पुनः सुनने की व्यवस्था, रेडियो, टेलीविजन, वीडियो, मोबाइल फोन तथा इंटरनेट के उपयोग ने विश्व को बहुत छोटा कर दिया है। स्थानीय संस्कृति के प्रसार का दायित्व इन्हीं जनसंचार के माध्यमों पर है। जनसंचार के माध्यमों ने स्थानीय संस्कृति को वैश्विक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सांस्कृतिक वैश्वीकरण – पहचान का संकट

मीडिया की तेज रफ्तार ने सांस्कृतिक वैश्वीकरण को बढ़ावा दिया है, विदेशी संस्कृति इसी रफ्तार से यदि फैली तो हमारी पहचान समाप्त हो जायेगी। वस्तुतः आर्थिक वैश्वीकरण से बड़ा संकट पहचान का है। भारत में पोप्यूलर संगीत के समक्ष भारतीय शास्त्रीय संगति परम्परा खो रही है, वर्षों की साधना से सीखा जाने वाला शास्त्रीय नृत्य पश्चिमी नृत्यों के सामने क्या स्थान रखेगा ?

भारतीय साहित्यिक रचनाओं का इतिहास अपनी पहचान बनाये रख पायेगा ? वस्तुतः सांस्कृतिक वैश्वीकरण में हमारी प्रादेशिक कलाऐं और विधाऐं पहचान खो रही है। हमारी प्रादेशिक कलाऐं और विधाऐं विलुप्त हो रही हैं और वैश्वीकरण पैर फैला रहा है। सांस्कृतिक पहचान और विरासत के बिना भारतीय समाज उथला और खोखला हो जायेगा।

हमारे परम्परिक वस्त्रों पर भी वैश्वीकरण का प्रभाव हो रहा है। पाश्चात्य पोशाकें, मद्यपान, धूम्रपान की संस्कृति का प्रचलन बढ़ रहा है। यद्यपि संस्कृति तो संस्कृति है लेकिन यदि हमने अपनी भारतीय संस्कृति की पहचान को खो दिया तो विश्व समुदाय में हमारा अलग सांस्कृतिक अस्तित्व कहां रह जायेगा और विशिष्ट स्थान रखने वाली भारतीय संस्कृति कहां जा रही है। संस्कृति की पहचान एक राष्ट्र की पहचान है जिसे सांस्कृतिक वैश्वीकरण से बहुत बड़ा संकट है। योगेन्द्र सिंह ने संस्कृति के वैश्वीकरण के प्रभाव से भारतीय मूल्यों, संस्थाओं और विचारधारा में तीव्र परिवर्तन को स्वीकारा है।

स्थानीय संस्कृति – भारत की स्थानीय संस्कृति विशिष्ट है जिसे वैश्वीकरण ने प्रभावित किया है। भारतीय मानवशास्त्री सर्वेक्षण ने 'भारत के लोग' प्रोजेक्ट के माध्यम से स्थानीय संस्कृति के तथ्य जुटाये हैं और यह तथ्य स्थापित किया कि भारतीय समाज बहुलवादी है इसे विविधता में एकता के रूप में देखा जा सकता है, जो स्थानीय संस्कृति की पहचान है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया अनेक भाषाओं, सांस्कृतिक क्षेत्र, बहुधर्मो, बहुजातीय और आदिवासी संस्कृति की विशिष्टताओं को प्रभावित कर रही है।

वैश्वीय बाजार और व्यापार से बढ़ता पोप्यूलर कल्चर – भारत का अन्य देशों से व्यापार बढ़ा है यह कोई नई बात नहीं है। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार पहले भी भारत का अन्य देशों से व्यापार रहा है। लेकिन विदेशी बाजार और व्यापार का संस्कृति पर प्रभाव नयूनतम था। वैश्वीकरण ने भारतीय जीवन शैली और संस्कृति में उथल–पुथल पैदा कर दी है। जीवन शैली, धार्मिक व्यवहार, उत्पादन–उपभोग के प्रतिमान बदल दिये हैं और एक नई पोप्यूलर कलचर का विकास हो रहा है जो वैश्वीकरण का ही उपोत्पाद है।

उपभोगवादी प्रवृत्ति का समाज और संस्कृति – भारत में हरित क्रांति, औद्योगिकरण, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के आगमन से भारत का औसतन नागरिक उपभोग की प्रवृति का बनता जा रहा है। बढ़ती मॉल संस्कृति, वस्तुओं के अनेक विकल्पों ने आवश्यकता की जगह उपभोग आधारित प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया हैं बिजली और सड़कों के जाल ने भारत के छोटे से छोटे इलाकों में भी खान–पान, रहन–सहन, पोशाक को प्रभावित कर सजातियता को बढ़ावा दिया है।

वैश्वीकरण और महिलाओं की प्रस्थिति – भारत जैसे देश पर अर्थव्यवस्था में पूंजी का महत्व बढ़ने से महिलाओं पर नकारात्मक प्रभाव बढ़े है। मनोरंजन उद्योग के नाम पर स्त्रियों का निर्यात, घरेलू काम–काज हेतु, देह व्यापार हेतु, स्त्रियों का छुपा हुआ व्यापार बढ़ा है। वैश्वीकरण एक अस्वस्थ रूप में स्त्रियों का दोहन कर उनकी प्रस्थिति को निम्न बना रहा हैं। यद्यपि वैश्वीकरण और आधुनिकता की अवधारणा में लैंगिक तटस्थता की बात होती है लेकिन वैश्वीकरण का महिलाओं के लिए एक नकारात्मक चेहरा भी उभर रहा है।

तीव्रता से उभरता मीडिया समाज – भारत पारम्परिक रूप में दीर्घकाल तक संचार की सरल व्यवस्था का समाज था जिसे 'मौखिक समाज' कहा जा सकता है। वैश्वीकरण के पिछले दस–पन्द्रह वर्षो में मीडिया से क्रांतिकारी बदलाव आये हैं। विकासशील देशों के नागरिकों के लिए साइबर स्पेस के अर्थ बदल गये हैं। पहली बार नागरिकों को लगा कि दुनिया उनकी मुट्ठी में है। भारत के लोगों की साइबर स्पेस में पहुंच यद्यपि कम है तथापि समाचार पत्र के अलावा, टी.वी. मोबाइल फोन, ईमेल, फैक्स, इन्टरनेट ने दूर दराज क्षेत्रों में अपनी पहुंच बनाई है। विदेश संचार निगम लिमिटेड अंतराष्ट्रीय संचार का बहुत बड़ा साधन है। दूर दराज क्षैत्र और स्थानीय समुदाय मुख्य धारा से जुड़े हैं और एक दूसरे पर सांस्कृतिक बदलाव का प्रभाव डाल रहे हैं।

फिल्मों, इन्टरनेट और टी.वी. पर देशी–विदेशी चैनल से संस्कृतियों का प्रसरण और विसरण तीव्र हुआ है। भारत में इन माध्यमों से मूल्यों, परम्पराओं और परिवार, विवाह के साथ स्त्री–पुरूष अन्तःक्रिया में स्वच्छतंदता के नये प्रतिमान प्रकट हो रहे हैं, जो भारत की विशिष्ट आदर्श संस्कृति को पाश्चात्य ढांचे में ढाल रही है। परिणाम स्वरूप सांस्कृतिक पहचान खतरे में आ रही है।

वैश्वीकरण और लोकतंत्र – वैश्वीकरण से जनचेतना बढ़ी है। लोकतंत्र अधिक प्रभावी हो रहा है। उत्पीड़ित और पिछड़ी जनता अपनी बदहाली के प्रति अधिक जागरूक हुई है। लेकिन राष्ट्र की राजनीति में विश्व बैंक, विश्व व्यापार संगठन आदि राष्ट्रीय संरचनाओं का वर्चस्व बढ़ा है। जिससे विकासशील देशों में प्रजातंत्र का अस्तित्व न्यूनाधिक मात्रा में खतरे में है। भारत का पारम्परिक अभिजन नेतृत्व भारत की आम जनता की अवहेलना करता है और राष्ट्रातीत संगठनों में वर्चस्व से भारत राष्ट्र के अधिकारों की चिंता भी नहीं कर रहा है। राष्ट्र की सफलता के तीन तत्व है– (1) अलग पहचान (2) वैधता एवं (3) अपनी सुरक्षा व्यवस्था। वैश्वीकरण से इन तीनों तत्वों को क्षति पहुंच रही है। राष्ट्रातीत संगठनों का प्रभाव बढ़ने से स्वतंत्र लोकतांत्रिक निर्णय लेने में बाधा आ रही है राष्ट्रों की वैधता और गरिमा खो रही है।

पर्यटन और प्रवासी भारतीय समाज – वैश्वीकरण, संचार, सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रभाव से पर्यटन यात्रा और प्रवास भी बढ़ रहा है। भारतीयों का विदेश में एवं विदेशियों का भारत में पर्यटन हेतु आवागमन बढ़ा है जिसके कारण सांस्कृतिक समरूपता सजातियता बढ़ रही है। भारत से विदेशों में प्रवास तेजी से बढ़ रहा है। दुनिया के सभी भागों में प्रवासी भारतीय बढ़े हैं जो अपनी भारतीय सांस्कृतिक पहचान को बनाये रखने का प्रयास कर रहे हैं किन्तु ये अब इतना आसान नहीं रहा है। विशिष्ट भारतीय संस्कृति की पहचान को खतरा है। विश्व की संस्कृति में सजातियता आ रही है और हमारी विशिष्ट स्थानीय संस्कृति का अस्तित्व डगमगाने लगा है।

पहचान का संकट – वैश्वीकरण ने सांस्कृतिक पहचान और अस्तित्व पर भी प्रभाव डाला है। वैश्वीकरण से आई आधुनिकता स्थानीय संस्कृति को प्रभावित कर रही है। भारत में संवैधानिक उपायों द्वारा स्थानीय एथनिक समूह को सांस्कृतिक स्वायत्तता और सुरक्षा का प्रावधान किया गया है। लेकिन वैश्वीकरण की शक्तिशाली प्रक्रिया में अर्थव्यवस्था, मीडिया, सूचना तकनीकी यंत्र स्थानीय और राष्ट्रीय पहचान के भविष्य को चुनौती दे रहा है। स्थानीय भाषा, धर्म, जीवन पद्धति और सांस्कृतिक मूल्यों की विविधता वाली संस्कृति को भारत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाये रखने की चुनौती मिल रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भादुरी, अमित व नैयर, दीपक (1996), दि इन्टेलिजेंट परसन्स गाइड टु लिब्ररलाइजेशन, पैंग्विन बुक्स।
2. दोषी, एस.एल. (2002), आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नवसमाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।
3. दुबे, अभय कुमार (संपा) (2003). भारत का भूमंडलीकरण, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
4. कोठारी, रजनी (1991), मासेज क्लासेज एंड द स्टेट, अर्ल्टनेटिव सोशल ट्रांसफोरमेशन एंड ह्यूमन गवर्नेंस, बसंत।
5. सिंह, योगेन्द्र (2000), भारत में सामाजिक परिवर्तन, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
6. वर्मा, एस.एल. (2008), हिंदुत्व का वैश्वीकरण, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।